International Journal of Applied Research 2016; 2(2): 40-42

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 40-42
www.allresearchjournal.com
Received: 18-12-2015
Accepted: 19-01-2016

कपिल कुमार सैनी
पटेल बस्ती, बेगु रोड सिरसा।

Correspondence
कपिल कुमार सैनी
पटेल बस्ती, बेगु रोड सिरसा।

शंकर शेष कृत नाटक'रत्नगर्भा' में राजनीति का विकृत रुप

कपिल कुमार सैनी

प्रस्तावना

भारतीय राजनीति प्रजातांत्रिक राजनीति है। इसी कारण हमारे देश में रजानीति दलों की बहुलता है। लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली के लिए सत्तारूढ़ दल के अतिरिक्त विरोधी दलों का होना अनिवार्य है। जब तक विपक्ष का विरोध नहीं होगा प्रशासन में निष्पक्षता तथा अनुशासन नहीं रह सकता है। राजनीति वही कर सकता है जो धनी हो। एक उदाहरण देखिए– चित्रकार तथा मूर्तिकार है। उसे एक आदर्शवादी निम्नमध्यवर्गीय परिवार से सम्बधित चित्रित किया गया है। वह मरना पसंद कर सकता है पर अपनी कला के आदर्शों से गिरकर समझौता नहीं कर सकता, इसलिए वह गरीब है। वह मूर्तिकला तथा चित्रकारिता में पारंगत है। वह अपनी बनायी हुई मूर्तियाँ किसी ऐसे व्यक्ति को बेचना नहीं चाहता जो कला तथा सौंदर्य का अर्थ ही न जानता हो। आप तीन सौ तो क्या हजार भी देंगे तो मैं अपनी मूर्ति आपके हाथ नहीं बेच सकता। क्या मुझे अपनी तरह व्यापारी समझते हैं? परवाह नहीं, मैं भूखे मर जाऊँ पर अपने चित्र और मूर्ति अरसिकों के हाथ नहीं बेचूँगा।"[1] अपने झूठे सिद्धांत तथा झूठे आदर्शवाद के लिए अपने परिवार को भूखो मारता है। ललिता गरीब चित्रकार और मूर्तिकार शेखर की पत्नी है। अगर शेखर आदर्शवादी है तो ललिता कम स्वाभिमानी नहीं है। वह शेखर से समझाते हुए कहती है, "इस दुनिया में कौन सी चीज बिकाऊ नहीं है। कवि अपने गीत बेच रहा है। संगीतकार अपना संगीत बेच रहा है। विद्वान अपनी विद्वत्ता बेच रहा है। लोग बेच रहे हैं। लोग खरीद रहे हैं।"[2] ललिता को गरीबी के कारण कई कष्ट उठाने पड़ते हैं, उसकी परिस्थिति का नाजायज फायदा उठाने का मुंशी प्रयत्न करता है। परंतु एक आदर्श तथा अपने पति का दुःख बाँटने वाली एक भारतीय नारी पर कोई असर नहीं पड़ता। इस प्रकार ललिता को एक प्रभावशाली तथा स्वाभिमानी नारी के रुप में चित्रित किया है। नीलू शेखर की बहन है। वह सच्चे दिल से अमीर सतीश से प्रेम करती है। परंतु अनादि को सतीश की असलियत का पता चल जाता है, वह नीलू को समझाने की कोशिश भी करता है, परंतु नीलू उसकी एक भी नहीं सुनती, बल्कि उसी को जवाब देते हुए कहती है, "अनादि बाबू, मैं कहती हूँ कि मैं सतीश को नहीं छोड़ सकती मैं उससे प्रेम करती हूँ। आज तक कोई कमीनापन उसने मेरे साथ नहीं किया। आप मुझसे जलते हैं। आप मुझे सुखी नहीं देख सकते।"[3] आखिर सतीश उसे धोखा देता है, वह सतीश के साथ उस मोह के क्षण को भोगती है, परंतु वह एक डरपोक औरत नहीं है अपने भोगे हुए मोह के क्षण के साक्षी को जन्म देना चाहती। कुमारी माता बनने का साहस बटोरती है। अनादि शेखर का मित्र है। अनादि को पहले एक आदर्शवादी चरित्र के रुप में चित्रित किया है लेकिन गरीबी तथा आर्थिक विवशता से अपने परिवार को बचाने के लिए वह अपने आदर्शों की बलि चढ़ा देता है। यह प्रतिभा संपन्न लेखक अपने आदर्शों से गिरकर अश्लिल उपन्यासों को निर्मित कर लाखों रुपये कमाता है।

शंकर शेष के नाटकों में राजनीति भी प्रभाव आदमी के संबंधों पर इतना गहरा हो गया है। न चाहते हुए भी उसे जब भी थोड़ा बहुत समय मिलता है, वह अपने परिजनों मित्रों या मिलने जुलने वालों से अनायास ही उसकी चर्चा कर बैठता है। इससे एक बात तो स्पष्ट होती है कि कहीं न कहीं गहरे अतल ते राजनीति हमारी रगों में समा चुकी है, लेकिन उसके बढ़ते विद्रूप के कारण लोगों में इसके प्रति मोहभंग भी होने लगा है। मगर राजनीति पर बात न करना आदमी की विवशता और बेबसी हो गई है, लेकिन कई बार पारिवारिक शांति के लिए राजनीति का परिवार से कुछ समय के लिए दूर खने का संकल्प भी ले लिया जाता है। लोग अपने घरों में इसका नाम भी नहीं लेना चाहते। 'नदी का काम बहना है' नाटक में नायिका के शब्दों में ''घर से चलते वक्त हमने तय कर लिया था कि आज भी शाम न तो हम राजनीति पर चर्चा करेंगे न विनय–आशीष फैक्ट्री की समस्याओं का ही रोना रोएंगे। अपने चौतरफा फैली अराजकता में जीते अक्सर लगता है कि फेफड़े स्वच्छ हवा के लिए तरसने लगे हैं। देश–विदेश की समस्याओं पर चर्चा करते यों भी तनाव और आतंक के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगता सो डिनर के स्वाद को बचाने के लिए फिलहाल हमने देश की सारी

समस्याओं को कल के लिए मलतवी कर दिया है। राजनीति कलुशित और जटिल है। इसने पारिवारिक सद्भाव को नष्ट कर दिया है। परिवार की सुख–शांति के लिए व्यक्ति राजनीति से कुछ समय के लिए किनारा कर जाना चाहता है, क्योंकि इसे भूल जाने में ही वह अपने और अपने परिवार की भलाई देखता है। सुनील लंदन जाकर हार्ट स्पेशलिस्ट एवं प्रसिद्ध सर्जन बन सके इसीलिए वह अपने गहने बेच देती है। वह त्याग, प्यार, श्रद्धा, बलिदान का प्रतिरुप है, जो पुरुष के जीवन में पीयूष स्त्रोत की भाँति बहती है। एक दिन उसके साथ एक बहुत बड़ी दुर्घटना हो जाती है, स्टोव के फट जाने से उसका चेहरा झुलस जाता है। वह यह खबर सुनील तक नहीं पहुँचने देती क्योंकि वह सुनील की असफलता का कारण नहीं बनना चाहती थी। दुर्घटना के बारे में सुनील को जब पता चल जाता है तब वह इला से नफरत करने लगता है। लेकिन इला उसकी नफरत को भी सह लेती है। अपने पति की खुशी के लिए अपनी बहन माया को सुनील के साथ शादी करने के लिए कहती है। वह अपने पति द्वारा किए गए अन्याय चुप–चाप सहन करती है, वह सुनील से कहती है, "सुनील मेरी ओर देखो। मैं इतना बड़ा आघात सहकर भी कैसे चूप रहती हूँ। सुनील तुम दुर्भाग्य का एक आघात भी नहीं सह सके। टूट गये। सुनील अब मैंने निर्णय कर लिया है कि तुम्हे किसी बात के लिए नहीं टोकूंगी तुम्हारी स्वतंत्रता में अब कोई रोड़ा नहीं अटकाऊँगी।"[4] सुनील दवा के रुप में जहर देकर उसे मारना चाहता है यह बात माया इला को बता देती है लेकिन इला उस पर विश्वास नहीं करती बल्कि यह कह देती है कि, देवता भी कभी पुजारी के माथे पर लात मार सकता हैं? सुनील इला का पति है। सुनील इला के सौंदर्य का उपासक है। एक सुंदर स्त्री उसकी पत्नी है इसका उसे अभिमान है। वह इला से एक क्षण भी अलग नहीं रह सकता था, लेकिन एक प्रसिद्ध हार्ट स्पेशलिस्ट एवं सर्जन बनने के लिए तीन साल उसे लन्दन रहना पड़ता है। वापस आते ही उसे इला की दुर्घटना के बारे में पता चल जाता है। वह इला से कहता है, "पर यह सब कैसे हो गया इला? मेरी सौंदर्यानुभूति का क्या होगा इला? मैं एक डॉक्टर हूँ। सर्जन हूँ। पर एक आदमी भी तो हूँ। मैं केवल त्वचा को चीरने का ही अधिकार नहीं रखता बल्कि मैं इस बात का भी ध्यान रखता हूँ कि वह विकृत न हो जाए। मैंने सौंदर्य को एक अलौकिक शक्ति माना है। पर आज आकाश को मुझ पर ही टूटना था। आज देवता ने खुद पुजारी के माथे लात मारी है।" [5] सुनील की दृष्टि से सौन्दर्य ही इस सृष्टि का सबसे बड़ा सत्य है। इला की दुर्घटना के बाद भी सुनील उसे अपनाना चाहता है, परंतु वह अपने मित्र जगदीश के बहकावे में आता है, इला से घृणा करने लगता है। इतना ही नहीं शराबी बनकर जुआ खेलना, वेश्यागमन करना शुरु करता है। उसके पतन की कोई सीमा नहीं रहती।"[6] अपनी प्रतिष्ठा से हाथ धो बैठता है। लोगों के पैसे कर्ज पर लेता है। उनके तकाजे से परेशान होता है। इला को उसके मामा से मिली प्रॉपर्टी पर नजर रखता है, इला से प्रेम का नाटक करके वह प्रॉपर्टी अपने नाम करवाना चाहता है, इला उसके शिकंजे में आ जाती है। इला के इन्श्योरेंस के साठ हजार रुपये पाने के लिए वह इला की हत्या करने के लिए भी तैयार हो जाता है। इस तरह से सुनील एक सुलझा पढ़ा–लिखा नामी डॉक्टर होने के बाद भी जगदीश जैसे मित्रों की संगत में पड़कर अपना सब कुछ गंवा बैठता है। अपना व्यक्तित्व ही खो बैठता है। माया इला की छोटी बहन है, वह पढ़ी–लिखी है, देखने में भी सुंदर है। इला की दुर्घटना के बाद सुनील इला पर अत्याचार कर रहा है यह वह सह नहीं पाती। वह इला से कहती है, "आदमी के पतन की भी सीमा होती है, जीजाजी जैसा सज्जन आदमी आज दानव बनता जा रहा है। जो आदमी सिगरेट तक को पाप समझता था, वह आज शराब पीता है, जुआ खेलता है, भ्रष्टाचार करता है, परायी औरतों के साथ..."[7] माया की दृष्टि से सती और पतिव्रता का अर्थ पति के साथ जिन्दा जल जाने में नहीं है, उसे सही राह पर लाने में है। जगदीश नाटक का खलनायक है। वह तो कहने भर का वकील है, किसी की वकालत ठीक से नहीं कर सका।

युद्ध जब राजनीति से प्रेरित होता है समाज में तो दहशत फैलता ही है, पारिवारिक स्नेह को भी शिथिल करता है, क्योंकि ''युद्ध एक नैतिक अपराध है यह मनुश्य के स्वाधीन जीवन, यापन के अधिकार का अतिक्रमण करता है। यह कभी भी सही नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें हुए जीवन का विनाश सदैव निंदनीय कार्य है, युद्ध का दोशी चाहे कोई भी हो, इसमें भाग लेने वाले दोनों पक्ष ही गलत होते हैं, क्योकि यह एक सामूहिक हत्या है।''[8] पुरुष पात्र 'मोदी' और 'सुदीप' तथा स्त्री पात्र 'छाया' यह तीन चरित्र ही नाटक के केंद्रीय चरित्र है। छाया एक मध्यवर्ग परिवार की लड़की है। जो बम्बई के एक झोपड़ पट्टी में छोटी सी चाल में रहती है। मोदी की कम्पनी में टायपिस्ट का काम करती है। उसी दफ्तर में काम करने वाले 'सुदीप' से वह प्रेम करने लगती है। लेकिन तब तक सुदीप से शादी नहीं करना चाहती जब तक उनका खुद का अपना घर हो। निम्न मध्यवर्ग में 'अपना घर' सबसे बड़ी समस्या है। दोनों मिलकर पैसों की बचत करते हैं, एक समय वड़ा पाव खाते हैं तो दूसरे समय राईस प्लेट खाकर अपने पेट की आग बुझाते हैं। सुदीप और छाया अत्यंत कंजुसी और मितव्ययिता करके पैसा जोड़ना शुरु करते हैं।"[9] उन्होंने बचाये पैसे एक बार बिल्डर खा लेता है, दूसरी बार सुदीप का मकान मालिक तथा तीसरी बार छाया का भाई गोविन्द। छाया और सुदीप का अपना घर और विवाह का सपना केवल सपना ही बनकर रह जाता है। "अरशा हो गया पाव–बड़ा खाते– खाते। जिन्दगी रहन हो गई साली उन चार दीवारों के लिए।"[10] छाया सुदीप के कहने पर मोदी से विवाह करती है, बीमार मोदी की जी–जान से सेवा करती है। वह मोदी के प्रेम को जीतती है। इस प्रकार छाया एक सच्ची गृहणी और ईमानदार लड़की है। सुदीप नाटक का केंद्रीय पात्र है, नायक है। मध्यवर्ग परिवार से सम्बन्धित है। अपना खुद का घर बनाने के लिए बहुत सी तकलिफें उठाता है। लेकिन घर के लिए सीदे रास्ते से पैसों का इन्तजाम नहीं हो पाता। आखिर छाया का साथ ले के मोदी के खिलाफ एक षड़यंत्र रचता है। मोदी से विवाह करने के लिए छाया को उकसाता है, क्योंकि मोदी दिल का मरीज है दिल के दो दौरे पड़ चुके हैं वह कभी भी मर सकता है और मोदी के मरने के बाद ही उनके सपने सच हो सकते हैं, ऐसा उसे लगता है। लेकिन सुदीप अपने इस षड़यंत्र में कामयाब नहीं होता। इस प्रकार अपनी प्रेमिका का अपने अभाव को दूर करने के उद्देश्य से इस्तेमाल करने वाले सुदीप के हाथों निराशा ही लगती है।

सन् साठ के बाद भारतीय राजनीति के विभिन्न परिदृश्य सामने आए हैं। भारतीय जनमानस के स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आकांक्षाओं का मोहभंग हो चुका है। जिस आशा और आकांशा से भारतीय जनता ने जिन हाथों में सत्ता सौंपी थी, उन हाथों की विश्वसनीयता भी भंग हो चुकी है। भारतीय जीवन में रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद बड़ी तेजी से उभरे। भारतीय राजनीति का प्रभाव नारी जीवन पर भी पड़ा, नए प्रजातांत्रिक संस्कारों का उदय हुआ, जिसके कारण नए मूल्यों का जन्म हुआ। अनेक समस्याएं उठ खड़ी हुई। राष्ट्रीयता नैतिकता का अवमूल्यन हुआ। इस प्रजातांत्रीय शासन तंत्र के सक्रांत जीवन का प्रभाव समकालीन कहानियों में देखा जा सकता है।

राजनीतिक गलियों में श्रेत्रीयता का बहुत प्रचार–प्रसार हुआ है। इस राजनीतिक सत्ता का प्रभाव सामाजिक मधुर संबंधों पर भी पड़ा हैं अपने देश में दूसरे राज्य के व्यक्ति विदेशी समझकर इसकी उपेक्षा तिरस्कार और सहज प्राप्त सुविधाओं से वंचित करने का शड्यंत्र से क्षेत्रीयवाद की कुत्सित मनोवृत्तियां आज की नाटक में देखने को मिलती है। ऐसी स्थिति का चित्रण जवाहर सिंह की नाटक 'अपने देश के परदेशी' में हुआ है–

कालजयी, मृत्युंजय, शीलभद्र, हस्तिदंत, कपालदर्शी, पूरबी, विजयकेतु, न्यायकेतु, सत्यकेतु, आचार्य, अजयमित्र, मुक्ता, वसुमित्र, द्वारपाल एवं सैनिकादि परंतु कालजयी प्रमुख पात्र है, जिसे अत्यंत क्रुर अन्यायी, अत्याचारी और दमन से अपना राज्य–कारोबार चलाने वाले राजा के रुप में चित्रित किया है। वह राजनीति में निपुण होने से अपनी सत्ता बरकरार रखते हुए सत्तामद से पागल बना रहता है। उसे प्रजा के प्रति दायित्वों की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है। वह केवल अपनी चिरतारुण्य की साधना में व्यस्त रहता है। उसे प्रजा के सुख–दुःख की कोई चिन्ता नहीं है। जो भी उसकी चिरतारुण्य की साधना में बाधा डालने की कोशिश करता है उसे वह मृत्युदंड की सजा देता है। राजा कालजयी ने अपने सैनिक सुविधा से जनता पर अत्याचार कर सके इसलिए नये रास्ते, छायादार पेड़ तथा अनाथालय खुलवाये। "आपने रास्ते बनवाए, लेकिन जनकल्याण के लिए नहीं। इसलिए कि इन रास्तों पर चलकर उनकी सेना सुविधा से जनता पर अत्याचार कर सके।"[11]

देश की स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति में जबरदस्त बदलाव आया है। राजनीति से जनसामान्य को जो आकांक्षाएं थी, वे धीरे–धीरे खत्म होती गई। राजनीति उन लोगों के हाथ में आ गई है, जो न तो राजनीति की गरिमा का पालन करते हैं और न ही उसमें जनकल्याण और लोकसेवा की भावना है। सिद्धांतों और आदर्शों की राजनीत समाप्त हो गई है। राजनीति में घूसखोरी, भाई–भतीजावाद और स्वार्थ की प्रवृत्ति बढ़ी है। नए प्रजातांत्रिक मूल्य, जो देश की आजादी के बाद सुनहरे और चमकदार लगते थे, उनकी चमक फीकी पड़ गई है। अपितु इन मूल्यों की पृष्ठभूमि में अनेक नई समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं।'' राष्ट्रीय नैतिकता का अवमूल्यन हुआ। इस प्रजातंत्रीय शासन तंत्र के संक्रान्त जीवन का प्रभाव कहानियों में देखा जा सकता है।

राजनीतिक स्तर पर लाभ कामने की प्रवृति का विस्तार इस हद तक हुआ है कि छुटभइए नेता, मंत्री, विधायक, सांसद आदि को लड़की सुलभ कराके राजनीतिक लाभ कमाते हैं।

स्वार्थी राजनीति ने देश की आजादी के समय भी घिनौने खेल खेले थे। देश दो भागों में बंट गया था और लोक एक–दूसरे के खून के प्यासे हो गए थे।'' अमृतसर में स्त्रियों को नंगा करके उनका जुलूस निकाला गया। सड़क पर खुले आसमान के नीचे उनके साथ बलात्कार किया गया था। उनकी छातियां काट ली गई। लाहौर में बच्चों का सिर भालों की नौंक में छेदकर शहर में घुमाया गया। जम्मू में गाड़ी को रोककर सभी स्त्री–पुरुषों को मौत के घाट उतार दिया गया।''[12] विभाजन के समय यह कत्लेआम सामान्य बात थी।

संदर्भ सूचीः

1. डॉ. हेमंत कुकरेती : शंकर शेष : समग्र नाटक भाग तीन, मूर्तिकार, पृ.40।
2. डॉ. शंकर शेष : मूर्तिकार; पृ. 55।
3. डॉ. हेमंत कुकरेती : शंकर शेष : समग्र नाटक भाग तीन, मूर्तिकार, पृ.50।
4. डॉ. शंकर शेष : रत्नगर्भा, पृ.59।
5. डॉ. शंकर शेष : रत्नगर्भा, पृ.20।
6. डॉ. बळीराम भुक्तरे : शेष के नाटकों में शेष विशेष, पृ.109।
7. डॉ. शंकर शेष : रत्नगर्भा, पृ.37।
8. Barker Ernest, The Political thought of Ploto – Aristotle, P. 292।
9. डॉ. शर्मा नीलिमा : साठोत्तर हिन्दी नाटक. पृ.149।
10. डॉ. हेमंत कुकरेती : शंकर शेष : समग्र नाटक भाग एक, घरौंदा, पृ.154।
11. डॉ. हेमंत कुकरेती : शंकर शेष : समग्र नाटक भाग दो, कालजयी, पृ.159।
12. विष्णु प्रभाकर, मृत्यंजय (आखिर क्यों), पृ0 29।